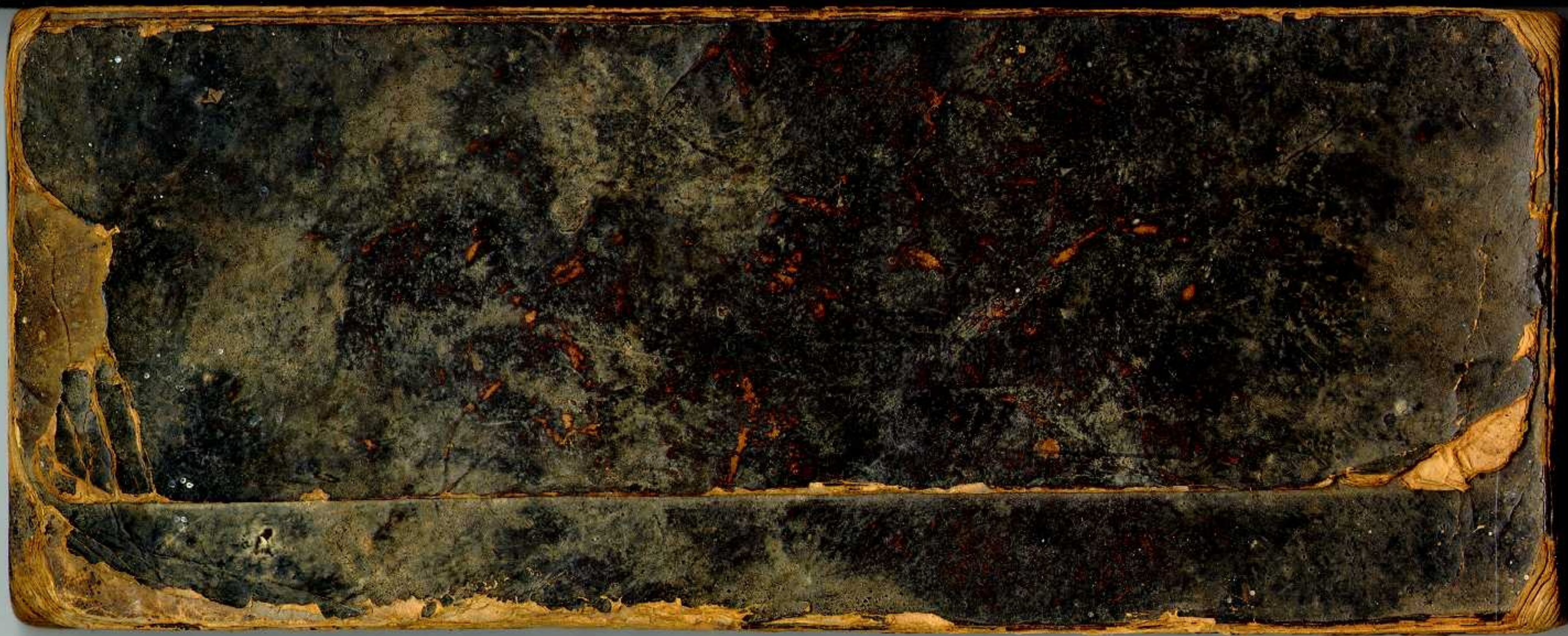






34

25

9

[illegible]

[illegible]

सि नित्यादि ॥ धननिष्पद्यरुजनयाचक्र ॥ मयाधि श्रुयादिमासनद्वय
 दि ॥ अखलमलुनाकान्त्यादि ॥ जंक्रांमोपत्रमगुन्यापादकां ॥ जंक्रांमोप
 त्रमद्विगुन्यापादकां ॥ ३ यत्रमष्टिगुन्यापादकां ॥ ३ यत्रमात्रायगुन्या
 पादकां ॥ ३ पूर्वसिद्धिगुन्यापादकां ॥ ३ आदिसिद्धिगुन्यापादकां ॥ ३ निगु
 न्नमस्त्राय ॥ ॥ जंक्रांमोपत्रमसूत्रनिश्रुमृगाल्वासेनायनमः ॥ ३ पा
 दाम्बुजास्त्रायपादकां ॥ ३ आत्मास्त्रायनमः ॥ जंक्रांमोपत्रमसूत्र ॥ ३
 : कनाय ॥ ३ जंक्रांमोपत्रमसूत्रनिश्रुमृगाल्वासेनायनमः ॥ ३ पा
 दाम्बुजास्त्रायपादकां ॥ ३ आत्मास्त्रायनमः ॥ जंक्रांमोपत्रमसूत्र ॥ ३

नि वायुवीजन दह संसाध्या ॥ न मिति वक्रि विजन दह नि दह न ॥ व मिति
 वक्रं विजना मृता मृता दह सा प्रावय न ॥ न मिति रु मि विजेन दह व
 यं कावय न ॥ त ना जिव स्व सान मानिय ॥ व १४ न नि वीजन वामना सा प
 न न प्रवय न ॥ य १२ मिति वीजन क मय न ॥ व १० मिति द क्षिणा सा मृ न
 न प्रवय न ॥ न ति प्राध्या मन रु न धु दि ॥ वा रु व काम ना ज ॥ कि वी ज म
 न्द वि ॥ ध न थ व आत्मा स रु न रं न य ॥ ॥ वै क्री सा वि पू न म्द वि आत्मा न
 व क्र २ पा दू की ॥ न ति न द ॥ ॥ त ना न्या स कावय न ॥ ३ वि पू न म्द वि अः
 माय रु ६५ क व सा ध न ॥ ३ वि पू न म्द वि अ रु षा य पा दू की ॥ ३ वि पू न म्दः

वि अ ना मि का र्था पा दू की ॥ ३ वि पू न म्द वि क नि षा र्था पा दू की ॥ ३ वि पू न म्द
 न्द वि क न पू षा य अ माय रु ६५ ॥ न ति क रं न्या स ॥ ॥ ३ वि पू न म्द वि नाः
 र्था पा दू की ॥ ३ वि पू न म्द वि द द या र्था पा दू की ॥ ३ वि पू न म्द वि णि न मः
 र्था पा दू की ॥ न ति रं ग न्या स ॥ ॥ वा रु व आ ध न ॥ काम ना ज द द य ॥ ६ कि वी
 ज रु म ॥ ॥ म्द वि व क न ॥ ध न मूल न्या स ॥ ॥ ज ल पा रु पू जा ॥ आ वा क
 ॥ ध न म्द ॥ ॥ वि पू ना द वि वि द रु ॥ क्री काम र्थ वि धी म ॥ रु सो ग ना क्री न प वा
 द या न ॥ वा रु वा दि स र्व द र्थ पा दू की ॥ ध न ज ल पा रु पू जा ॥ ॥ न ना अ र्थ पा
 य पू ज न ॥ आ स न अ नि म न्द ना य द ण क ना म न पा दू की ॥ स मृ य मि लु ना य

[illegible]

१ कृष्णपादकी ॥ २ ॥
नपादकी ॥ क्लीं अक्षयपादकी ॥ सौवीररुद्रपादकी ॥ ३ नानापूषपादकी ॥
आवाहन माननि ॥ महापद्मवनाकमुखादि ॥ शिवांजनि ॥ आवाहनादिः
वन्दनाक्षतपूर्यनमः ॥ शिखण्डमूर्धादक्षयिनी ॥ त्रिमसमस्तप्रकृतगुणगुफा
तत्रसंप्रदायकवकात्रिनिगर्हत्रहस्यातिनेहस्ययानिनिपादकस्थानम
ः सः ॥ ॥ शिवपूजनं ॥ लालितं लूणीकवर्गलक्ष्म्यायपादकी ॥ श्रीकृष्ण
पद्मकनाथयपादकी ॥ शक्तिशक्तिजात्रधनिमहाजिह्वात्रहनयानायपा
दकी ॥ श्रीसिद्धिनामपूषपादकी ॥ अजिह्वांजनिपादकी ॥ धननैव
लि ॥ श्री वाक्कः गजगण्डनकुनिःविन्दुः यानिमूर्धादक्षयिनी ॥ ध्वजदीप
आसननय ॥ ४ ॥

आप साध ॥ गेष्ठापूर्वकमानं गगनमनविर्हं कर्मपञ्चागिनिध्वामुत्तुच
लुमुत्तु द्वात्रिंशत्तिमूर्खं विप्रिह्वर्गल ॥ ११ ॥ पृथ्याया धूपदिष्टामपमदिवः
लिहिवर्षिताहविर्गं अकर्म लिसिद्धिकामा विनिर्ह्वद्विर्गं तुकिमुक्तिप
दाता ॥ पूजाया अन्कमनिवाक् ॥ ॥ गताद्यानपूजयन् ॥ चिंजीधीर्गं गलप
तयनमः ॥ ३ कौकुर्यालायनमः ॥ ३ द्वात्रिंशियनमः ॥ ३ दं दहलनमः ॥ ३ गं
गलपतयनमः ॥ ३ दं दन्तियनमः ॥ ३ वं वदकायनमः ॥ ३ कौकुर्यालायनः
मः ॥ ३ वत्तमलुलायनमः ॥ ३ क्लीकामदवायनमः ॥ ३ वं वसकायनमः ॥ ३
दं दहनिनमः ॥ ३ र्म सनसत्येनमः ॥ ३ धियेनमः ॥ ३ मायेनमः ॥ ३ दन्तिये

नमः ॥ ३ रुद्रकायेनमः ॥ ३ सस्येनमः ॥ ३ गुरुर्येनमः ॥ ३ गेथेनमः ॥ ३ लाकः
धरिणमः ॥ ३ वा गल्येथेनमः ॥ गानरु विद्यासादनं ॥ ३ अयमवर्षयुयहनाः
अहुताविविसिद्धिना ॥ गहुताविप्रिकरुर्न ननाता ॥ शिवाक्या ॥ ३ दं दहनि
नमः ॥ ३ वक्त्रनवास्त्राधिपतयनमः ॥ धनदानपूजा ॥ ॥ गतादिगात्रपू
जनी ॥ ३ लं लुद्धाय वदहमायः सवाधिपतयनेवावतवाहनायः वदहमा
यः ॥ कियूकाय साक्षत्राय सपनिवात्राय नमः ॥ ३ नृशानय गजाधिपतय
मघास्त्राय ॥ किरुमाय ॥ कियूकाय साक्षत्राय सपनिवात्राय नमः ॥ ३ मय
माय पुनाधिपतय महिमाय दलुहमाय ॥ कियूकाय साक्षत्राय ॥ वं वि

वाचाय नमः॥ ३ दूने मयाय वाक्षसाधिपतय मनूषासाय खड्गहस्ताय ॥
क्रियूकाय सांगनाय सपविवाचाय नमः॥ ३ वृन्वलय जवाधिपतय मक
नासाय पाहाहस्ताय ॥ क्रियूकाय साक्षनाय सपविवाचाय नमः॥ ३ रूवाय
वेष्टाधिपतय हलिनासाय अकसहस्ताय ॥ क्रियूकाय साक्षनाय सप
विवाचाय नमः॥ ३ कवनाय जवाधिपतय अष्टवाहनाय गदाहस्ताय ॥ क्रि
यूकाय साक्षनाय सपविवाचाय नमः॥ ३ दूनीनाय विद्याधिपतय वृष्टा
धाय धून्वहाय ॥ क्रियूकाय साक्षनाय सपविवाचाय नमः॥ ३ अशूनका
य नागधिपतय चक्रहस्ताय ॥ क्रियूकाय साक्षनाय सपविवाचाय नमः॥

॥ ३ डंडवक्रनविद्याधिपतय हंसानूराय पद्महस्ताय ॥ क्रियूकाय साक्ष
नाय सपविवाचाय नमः॥ कामगिनादिपिठि ॥ ३ तिदिन्यात्रपूजा ॥
कलसकसुपूजनं ॥ नामः ॥ ३ संसः ॥ आधमनाकाय पादुकां ॥ श्रीनारद
य पादुकां ॥ कन्दामाय पादुकां ॥ कर्लिकासाय पादुकां ॥ यद्रासाय नमः ॥
न ॥ ३ द्रष्टुं कसं कामं दिनं चन्द्रमोलिकं ॥ वनदारय हर्षद्वर्ष मन्दमाल
धर्षद्वर्ष ॥ ३ वं धात्वा महाद्वर्ष ॥ ३ कामार्थसिद्धि ॥ ३ अघात्रवज्र ॥ ३ सं
समर्थजयाय अमिगिष्वन महादेवनाय अमृतमहालक्ष्मी ॥ क्रिसहि
ताय संसं संपादुकां ॥ मूलमनुनठियां जलि ॥ ३ ठं गनसं पूषा ॥ धर्षव

मार्ग (विनायनम॥३)

[illegible][illegible]

वानन्द विनाधिपतय श्रीमहाविद्यावाक्यनि स्कं कलकम रुदुनि
 काय अलिमूर्तय पादुकां ॥ ददया दिवठ (न न) संपूय ॥ आवाक
 यानिमूर्ता दक्षयन ॥ धनं वलि ॥ धूप दीप जाय ॥ कां वित्याः
 विपुन्यादि ॥ धनं केलमकं रुपुजनं ॥ ॥ नताकमां चिर्न काप्रयन ॥
 आधनवर्ग कि कसलासायनम ॥ पूर्ण दत्ता ॥ धव आसन कासनय ॥ देः
 वलक आसननय ॥ उं क्रीं सौः विपुनसुन्द वि अमृता न वासनायनम ॥ पा
 दो ॥ उं क्रीं सौः विपुनसुन्द वि पातामृता साय पादुकां ॥ जानो ॥ क्रीं क्रीं सौः
 विपुनवासिनिदवासासाय पादुकां ॥ उ न ॥ हं क्रीं सौः विपुनापी वका

साय पादुकां ॥ कलि ॥ क्रीं क्रीं सौः विपुनमालिनि सर्वमकासाय पादुः
 कां ॥ गूक ॥ क्रीं क्रीं सौः विपुना सिद्धवति साधु सिद्धसाय पादुकां ॥ मन्त्रो
 धल ॥ ॥ निखरासनं विनयसनाम ॥ ॥ नतावाहनाम ॥ श्री श्री कलप
 नदित्रिस्थानमः ॥ निवसि ॥ श्री नकाय विनयार्थानम ॥ मुखवर्त ॥ ॥ सु
 धेम ॥ धाम विनयानम ॥ दक्षिणनरु ॥ ॥ निमूर्तिना नादिस्थानम ॥ वा
 मनरु ॥ उं अमन्त्र ॥ वदुलिदिस्थानम ॥ दक्षिणक ॥ उं अर्घासि दिघ
 धानार्थानम ॥ वामाक ॥ ॥ परावर्त नि ॥ दिघमृ खिस्थानम ॥ दक्षिणनासा
 पृठ ॥ मं अतिथिम ॥ धामृ खिस्थानम ॥ वामनासा पृठ ॥ ॥ हली ॥ दिघ

ॐ जिह्वा स्थानमः॥ दक्षलग्नः॥ ॐ हनसकः॥ दक्षिणस्थानमः॥ वामग
ॐ ॥ वं मलिमदुदकस्थानमः॥ अधुताय॥ वं शनिकः॥ विक्रमसुदिः
स्थानमः॥ उदुताय॥ ॐ सत्याजानमः॥ कालामुखिस्थानमः॥ अ॥ धदनु॥ ॐ अन
ग्रहधन॥ उक्तमुखिस्थानमः॥ उदुदनु॥ अ॥ अक्षनमः॥ प्रीमुखिस्थानमः॥ उ
दुलित्रसि॥ अ॥ महाभनः॥ विद्यानुखिस्थानमः॥ मुखसर्वनः॥ क॥ काधम
महाकालिस्थानमः॥ दक्षिणवायुः॥ खंचनः॥ सत्रसर्गस्थानमः॥ दक्षिण
द॥ ॐ गं पंतागमः॥ सत्रसिद्धिस्थानमः॥ दक्षलग्नमलिर्वधु॥ धनिवात्मने
लाकविश्वस्थानमः॥ दक्षशृंगुलिमूल॥ दं चकनूदसर्मगुणकिस्थानमः

दक्षलग्नशृंगुला॥ ॐ च॥ कर्म॥ स्वात्म॥ शृंगुस्थानमः॥ वामवायु॥ दं चकनूदः
॥ रुगामृगस्थानमः॥ वामद॥ ॐ च॥ वहुनानन॥ लम्बाद्विस्थानमः॥
वाममनिवन्धु॥ अ॥ अक्ष॥ दावलीस्थानमः॥ वामशृंगुलिमूल॥ अ॥ सवे
॥ नगविस्थानमः॥ वामशृंगुना॥ ॐ ॥ सामसत्र॥ खचविस्थानमः॥ दक्षकहि॥
ॐ लांगलिसर्मजलिस्थानमः॥ दक्षजानू॥ ॐ दा॥ नूलिमः॥ नृपिनिस्थानमः॥ दक्ष
लग्नगुरु॥ ॐ अ॥ दना॥ नीधन॥ विप्रनीस्थानमः॥ दक्षपादागुत्रमूल॥ लं॥ डमाः
कान्ठ॥ नादविस्थानमः॥ दक्षलग्नपादागुत्रा॥ ॐ ॥ अ॥ पाठि॥ पूननास्थानमः
॥ वामकहि॥ ॐ द॥ ॐ म॥ रुद्रकालिस्थानमः॥ वामजानू॥ दं अ॥ गी॥ प्र॥ या॥ गि॥ नी

स्यां नमः॥ वामगुल्फ॥ धर्मिनमः॥ हंसिनिर्वाणमः॥ वामपादांगुलिमूत्र॥
नमः॥ गङ्गानिर्वाणमः॥ वामपादांगुलाग्रः॥ पलाहिनमः॥ कालनाशी
स्यां नमः॥ दक्षलपास्य॥ हंसिनिर्वाणमः॥ वामपास्य॥ वः
कुल॥ सकपद्वानिर्वाणमः॥ पिष्टवर्ण॥ हंसिनिर्वाणमः॥ वक्रकालिनी
मः॥ नाशी॥ ममहाकालिनी॥ जयास्यां नमः॥ ॐ॥ यथात्रिंशत्समूहिवि
स्यां नमः॥ ददय॥ ननुर्ज॥ गमत्रवनिर्वाणमः॥ दक्षिणवाक्मूल॥ लंपिना
की॥ माधवीस्यां नमः॥ वामवाक्मूल॥ वंखनिर्वाणमः॥ वायुनिर्वाणमः॥ अथ
त्राल॥ हंसिनिर्वाणमः॥ दक्षिणकर्षि॥ धर्मनाशी॥ लक्ष्मीनिर्वाणमः॥
वा

स्यां नमः॥ वामकर्षि॥ मरुत्तिसमहा मायास्यां नमः॥ ददादिपानिपादक
गत्र॥ हंसिनिर्वाणमः॥ दमनिर्वाणमः॥ ॐ॥ लंचुवाननमः॥ माहनिर्वाणमः॥
नमः॥ मुख॥ हंसिनिर्वाणमः॥ मुखसर्वाग्र॥ **निधीकन्तुदिनामः॥**
॥ **माहकाहनामः॥** नामनिर्वर्तयद्विधाधनामस्यत्रं सत्रं॥ गाल
॥ प्रथमानामद्वितीयमुग्रहामनः॥ नक्षत्ररुतयः॥ यागिनिर्वाणमः॥
दुर्धर्क॥ वासिनिर्वाणमः॥ घृष्टपी॥ ॐ॥ निगधन॥ वाधनामस्यत्रं पाक
वनिर्वाणमः॥ वनिर्वाणमः॥ वनिर्वाणमः॥ वनिर्वाणमः॥ वनिर्वाणमः॥
वाक्यं॥ यतिमान्मूखाजन॥ सयवंपूषः॥ सर्वथागिनिर्वाणमः॥ नाह्यपूषान
वाक्यं॥ यतिमान्मूखाजन॥ सयवंपूषः॥ सर्वथागिनिर्वाणमः॥ नाह्यपूषान

सुपूत्रपिभयनमः॥श्रृंकदालपिभयनमः॥श्रृःचदुपूत्रपिभयनमः॥कंछीपि
 भयनः॥संयकालपिभयनमः॥गंजालधनपिभयनमः॥यंमालवपिभयनमः॥
 दंकनूतपिभयनमः॥चंदविकाटपिभयनमः॥द्वंमकळपिभयनमः॥जंमनूतः
 धनपिभयनमः॥मंश्रुदुहामपिभयनमः॥श्रृंविनाऊपिभयनमः॥दंनऊग्रह
 पिभयनमः॥०ंमालमथपिभयनमः॥उंकार्णिनिपिभयनमः॥दंहुलापूत्रपि
 भयनमः॥लंउाकात्रपिभयनमः॥तंऊयनिकापिभयनमः॥धंऊयनिपिभयन
 मः॥दंउत्रिजापूत्रपिभयनमः॥धंदिलपूत्रपिभयनमः॥नंरुक्तिनापूत्रपिभयः
 नमः॥पंदासपिभयनमः॥रंयथागपिभयनमः॥वंषष्टपूत्रपिभयनमः॥रंः

मायापूत्रपिभयनमः॥मंजात्रधनपिभयनमः॥यंसत्रयनिविपिभयनमः॥रंछीनित्र
 पिभयनमः॥लंसनूनिविपिभयनमः॥वंनित्रिद्वत्रपिभयनमः॥०ंमादुदुपिभयनमः॥
 वंवासनपूत्रपिभयनमः॥संहिलपूत्रपिभयनमः॥रंसंमालक्षिपू
 त्रपिभयनमः॥लंउादियानपिभयनमः॥दंहुयादुत्रपिभयनमः॥रंनिः
 विठिनामः॥ ॥श्रृंकार्णिनिविपूत्रायनमः॥श्रृंमादनिविपूत्रायनमः॥रं
 मदनाविपूत्रायनमः॥०ंउत्मादिनिविपूत्रायनमः॥उंदावलेविपूत्रायनमः
 ॥उंखवत्रिपूत्रायनमः॥मंमलिकाविपूत्रायनमः॥मंकुवावलिपूत्रा
 यनमः॥०ंऊदनिविपूत्रायनमः॥०ंनिवदूनिविपूत्रायनमः॥उंछुरुगविपू

प्रायनमः॥ वैरुगमहाविष्णुप्रायनमः॥ ॐ विष्णुस्वस्ति विष्णुप्रायनमः॥ ॐ महा
 लक्ष्मि विष्णुप्रायनमः॥ श्रीकालनिविष्णुप्रायनमः॥ ॐ वासुदेवि विष्णुप्रायनमः॥
 खंवापिनिविष्णुप्रायनमः॥ गुरुगवहाविष्णुप्रायनमः॥ धंवावस्वविष्णुप्राय
 नमः॥ दंवामिकाविष्णुप्रायनमः॥ चंविमलाविष्णुप्रायनमः॥ कुरुगमस्य
 विष्णुप्रायनमः॥ ॐ मन्दविष्णुप्रायनमः॥ मं निलप्रगाविष्णुप्रायनमः॥ ॐ
 सिद्धस्वविष्णुप्रायनमः॥ ॐ शुनिमासि विष्णुप्रायनमः॥ ॐ शुभाया विष्णुप्रायन
 मः॥ ॐ वल्लमालाविष्णुप्रायनमः॥ ॐ मंगला विष्णुप्रायनमः॥ वैरुगमालिनि वि
 ष्णुप्रायनमः॥ नं वीधाविष्णुप्रायनमः॥ धंवागस्वविष्णुप्रायनमः॥ दं शुमिका

विष्णुप्रायनमः॥ धं शुदुसाह विष्णुप्रायनमः॥ नं वासवापिनि विष्णुप्रायनमः॥
 ॥ पंचकस्वविष्णुप्रायनमः॥ ॐ कालनिविष्णुप्रायनमः॥ वैष्णवविष्णुप्राय
 नमः॥ ॐ शुनामा विष्णुप्रायनमः॥ मं लाकस्वविष्णुप्रायनमः॥ यंत्रका विष्णु
 यनमः॥ वं शुका विष्णुप्रायनमः॥ लं शुका विष्णुप्रायनमः॥ वं शुप्रा विष्णुप्राय
 नमः॥ ॐ समसा विष्णुप्रायनमः॥ धं विमला विष्णुप्रायनमः॥ ॐ शुभाया विष्णु
 यनमः॥ ॐ रुद्रवी विष्णुप्रायनमः॥ लं शुधाया विष्णुप्रायनमः॥ ॐ सच्चिदमृतिः
 प्रायनमः॥ ॐ निर्याम विष्णुप्रायनमः॥ ॥ श्रीकामरुतिर्यामः॥ श्रीकामी
 निधिति निर्यामः॥ ॐ कान्कानि र्यामः॥ ॐ कान्कानि मन्त्राहल निर्यामः॥ ॐ

कामधुकमत्रिलस्यां नमः॥ ॐ कामचालिविनासिनिस्यां नमः॥ ॐ कामकिल्यत्रनि
 स्यां नमः॥ ॐ कां वृकस्यामनिस्यां नमः॥ ॐ कामवर्द्धनकधुविमिनास्यां नमः॥
 ॐ कामविष्णुनास्यां नमः॥ ॐ वमविष्णुनदिस्यां नमः॥ ॐ वमनत्रलिदिस्यां नमः
 ॥ ॐ वनित्राथदिगम्वनास्यां नमः॥ ॐ वनिप्रियवामास्यां नमः॥ ॐ लानिनाथक
 जास्यां नमः॥ ॐ वमाकान्नपनास्यां नमः॥ ॐ ववमाननिस्यास्यां नमः॥ ॐ वनिमाव
 लकशानिस्यां नमः॥ ॐ गलमाहनिस्यां नमः॥ ॐ वनंदकमदास्यां नमः॥ ॐ वनदिना
 वनाहुवस्यां नमः॥ ॐ वंदेनंदयिहिसुविचल्लास्यां नमः॥ ॐ वनिमाववमदिस्यां नमः
 ॥ ॐ वनिर्मयकवप्रियास्यां नमः॥ ॐ वृषधन्वकदिस्यां नमः॥ ॐ मरुधनुस

मुखिस्यां नमः॥ ॐ कामलिस्यां नमः॥ ॐ कामनऊटिनिस्यां नमः॥ ॐ वममानपा
 लिनिस्यां नमः॥ ॐ वमलिस्यास्यां नमः॥ ॐ वान्नमृषास्यां नमः॥ ॐ वमनित्रमा
 स्यां नमः॥ ॐ वरुगलमास्यां नमः॥ ॐ वान्नचात्रलानास्यां नमः॥ ॐ वमववववववव
 स्यां नमः॥ ॐ वान्नमाहनदाजिह्वास्यां नमः॥ ॐ वमावकूत्रप्रियास्यां नमः॥ ॐ वम्वलाला
 दिस्यां नमः॥ ॐ वमाहनवर्द्धनरुहणीस्यां नमः॥ ॐ वमदनकपटनास्यां नमः॥ ॐ वम
 मथपूपास्यां नमः॥ ॐ वमागर्मिलीस्यां नमः॥ ॐ वरुगवायीकलीसिनिस्यां नमः॥
 ॐ वमयकविष्णुनामुखिस्यां नमः॥ ॐ वनिगिनिदिनीस्यां नमः॥ ॐ वनवकवम
 स्यां नमः॥ ॐ वान्नककानिस्यां नमः॥ ॐ वमरुक्ककास्यां नमः॥ ॐ वमरुक्कवृषाद

सुन्दरिद्विनिमः॥दक्षगुल्फ॥३॥पुनसुन्दरिद्विनिमः॥वामगुल्फ॥३॥
पुनसुन्दरिद्विनिमः॥गुल्फ॥३॥पुनसुन्दरिद्विनिमः॥दक्षपाद॥३॥पुः
नसुन्दरिद्विनिमः॥वामपाद॥३॥पुनसुन्दरिद्विनिमः॥दक्षदय॥३॥पुः
नसुन्दरिद्विनिमः॥दक्षरुम्फ॥३॥पुनसुन्दरिद्विनिमः॥वामरुम्फ॥३॥
पुनसुन्दरिद्विनिमः॥क॥॥॥**रुनिनवयानिनाम॥** ॥**वाग्वश्राधन॥**काम
नाजद्वय॥॥किवीजरुम॥॥सुन्दरिद्विद्विनिमः॥**रुनिद्विद्विनिनाम॥** ॥
वेङ्कैसौ श्रीशक्तगन्धवापिकायनमः॥श्राधन॥**वेङ्कैसौ** श्रीवित्तागन्धवापि
कायन ॥मः॥दक्षदय॥**वेङ्कैसौ** मरुं कलैकी शिवगन्धवापि कायनमः॥शुम

॥**वेङ्कैसौ** श्रीसर्वगन्धवापिकायनमः॥वृद्धन॥**रुनिगन्धवापिनाम॥** ॥
वेङ्कैसौ १३ वि सु पुनकलाकिनीनमः॥क॥॥**वेङ्कै** १२ श्रुनाद्विनीनमः॥दक्ष
य॥**वेङ्कै** १० मलि पुनकलाकिनीनमः॥नलो॥**वेङ्कै** दक्षधिसुनकाकिनीनमः
॥साधिसुन॥**वेङ्कै** वंषं स मनाधन॥किनीनमः॥मनाधन॥**वेङ्कै** दक्षश्राद्धापि
० रुद्राकिनीनमः॥नरु॥**रुनिद्विद्विनिनाम॥** ३ मरुं ममलुलायनमः॥दक्षन
रु॥३ मरुं ममलुलायनमः॥वामनरु॥३ मरुं ममलुलायनमः॥वामनरु॥**रुनि**
दिनरुनाम॥ ॥**धननामविधि॥**श्रुध्यातु पूजयत॥धनमनपूजयत॥दि
कान श्रापयकान कामध्वनिपूज॥दक्षकान वक्षध्वनिपूज॥वामकान रुमसा

[illegible][illegible]

रुञ्जनिह्या गुहा जिपुत्रसूत्रनि ॥ जैङ्गीं श्रीः जिपुत्रसूत्रनि देवी श्रीपादुकां ॥ मधुसू
 पुत्र ॥ ३ सर्वकषीली मूर्धा दक्षिणामिनमः ॥ जगत्पुत्रादयानि नृ निमित्तसर्व
 मंकारकोलवक्रपूजाविधिः ॥ अथ वदुदक्षिणवक्रिकावक्रपूजायाम् ॥ ॥ धनमा
 रुनिहय ॥ ॥ वदुदक्षिणवक्रकायनमः ॥ जैङ्गीं श्री सर्वसंकारिनि देवी श्रीपादुकां
 ॥ ३ सर्वविदावली देवी श्रीपादुकां ॥ ३ सर्वकषीली देवी श्रीपादुकां ॥ ३ सर्वज्ञादनि दे
 वी श्रीपादुकां ॥ ३ सर्वसंसारनि देवी श्रीपादुकां ॥ ३ सर्वसुखनि देवी श्रीपादुकां ॥ ३
 सर्वजंरुली देवी श्रीपादुकां ॥ ३ सर्वजलनी देवी श्रीपादुकां ॥ ३ सर्वजली देवी
 श्रीपादुकां ॥ ३ सर्वसाधनि देवी श्रीपादुकां ॥ ३

सर्वसम्यक् जिपुत्रनि देवी श्रीपादुकां ॥ ३ सर्वद्वै
 दकथं कनि देवी श्रीपादुकां ॥ ३ सर्वविदावली देवी श्रीपादुकां ॥ ३ सर्वकषीली देवी श्रीपादुकां ॥ ३ सर्वज्ञादनि दे
 वी श्रीपादुकां ॥ ३ सर्वसंसारनि देवी श्रीपादुकां ॥ ३ सर्वसुखनि देवी श्रीपादुकां ॥ ३ सर्वजंरुली देवी श्रीपादुकां ॥ ३ सर्वजली देवी
 श्रीपादुकां ॥ ३ सर्वसाधनि देवी श्रीपादुकां ॥ ३

प्रीयादुर्का ॥ ३ सर्वकामप्रदादवी प्रीयादुर्का ॥ ३ सर्वदुःखविनाशनिदवी प्रीयादुर्का ॥
३ सर्वमृत्युविनाशनिदवी प्रीयादुर्का ॥ ३ सर्वविघ्नविनाशनिदवी प्रीयादुर्का ॥ ३
सर्वसुखनिदवी प्रीयादुर्का ॥ ३ सर्वसौभाग्यदायनिदवी प्रीयादुर्का ॥ पश्चिमादि
काले नैमत्यानं वामावर्तलपूजयन् ॥ अस्मिन् चक्रवक्रनायिका ध्यानमनु ॥ यः
ब्रह्मयवनारुति मारुमानकुं वृक्षां पुष्पपद्मासनानुकां प्रयत्नीति पुत्राधयः
क्षौं क्षौं क्षौः शिपुनादवी प्रीयादुर्का ॥ ३ सर्वपूष ॥ ३ सर्वसत्त्वादनकलिमूर्धाद
श्यामि नमः ॥ अनाः कलकोलयानि निः पंचम सर्वधिसाधक चक्रपूजाविधि
॥ ॥ अथ अश्वत्थवदहान्तिका चक्रपूजयन् ॥ अश्वत्थवदकायनमः ॥

क्षौं प्री सर्वज्ञानदवी प्रीयादुर्का ॥ ३ सर्वलोकप्रियदवी प्रीयादुर्का ॥ ३ सर्वव्ययिषया
यलीदवी प्रीयादुर्का ॥ ३ सर्वज्ञानमयीदवी प्रीयादुर्का ॥ ३ सर्वबाधिविनाशनिद
वी प्रीयादुर्का ॥ ३ सर्वधनसुखप्रियीदवी प्रीयादुर्का ॥ ३ सर्वपापहनादवी प्रीया
दुर्का ॥ ३ सर्वनिन्दमयिदवी प्रीयादुर्का ॥ ३ सर्ववक्रा सुवृषिनिदवी प्रीयादुर्का ॥
३ सर्वसिंहलपदादवी प्रीयादुर्का ॥ पश्चिमादिकाले नैमत्यानं वामावर्तनम
पूष ॥ अस्मिन् चक्रवक्रनायिका ध्यानमनु ॥ ६४ निपासं लिताकां मारुलं गं ववित्रम
नीलवल्गुं तिनरुं च प्रयत्तिपुत्रमानि च ॥ क्षौं क्षौं क्षौः शिपुनादवी प्रीया
दुर्का ॥ म (धर्म) पूष ॥ क्षौं सर्वमर्हकृष्ण मूर्धादश्यामि नमः ॥ अना निमर्हया निः

[illegible]

व नारुया ॥ ॐ श्रीं क्रीं छि प न सि द्धा प्री या दू की ॥ म (धर्मं) पूज्य ॥ ॐ सर्वस्व विनिम
 यी द ह रिया मि न ल मः ॥ प्रता नि व रु म्मा या नि न्ना स फ म स व नो ग ह व च क पू ज
 विधि ॥ ॥ अथ वानाया प्रत्यायुध वक्र अष्ट को ल स न न जि को ल न नाल प पू ज
 यत् ॥ ॥ प्रतायुध वक्राय नमः ॥ वैं जीं धीं वैं यों वां लां वां सां डां दीं क्रीं नूं सः ऊं नूं न
 स्यः कामं ध्वनवान् नानमः ॥ वैं जीं धीं वैं यों वां लां वां सां डां दीं क्रीं नूं सः वैं यों वां लां वां सां नूं ऊं नूं नस्यः
 कामं ध्वनिवा (ल) नानमः ॥ पश्चिम ॥ वैं जीं धीं वैं यों वां लां वां सां डां दीं धं मां रुनाय कामः
 ध्वनवा पाय नमः ॥ वैं जीं धीं वैं यों वां लां वां सां डां दीं क्रीं नूं सः वैं यों वां लां वां सां धं मां रुनाय कामं ध्वनि
 वा पाय नमः ॥ डरुव ॥ वैं जीं धीं वैं यों वां लां वां सां डां दीं क्रीं नूं श्रीं वशि क न लय काम

दि॥ न क प द्या स्या य न मः॥ ध्यान॥ बहु बुद्धिं निरुद्धं च बहु कानि समायमां। प
रुका दधनं दवी पाषां कृष्ण कन्यायां॥ **हियां जलि॥** ॥ **उं ह्रीं सोः** सा म च क
पूर्व निविगद न ग्रीष्म सनाथ सिक रुग मालिनि दवी बुद्ध्या अलक्ष्मी
पादकां॥ खड्ग (नन संपुत्र॥ आवाक मुखा दधय न॥ वलि॥ सोः हि पुत्रा द विवि
द्वद्वं ह किं विधी मदि न न्या मरु प्रिय वा दया न॥ धन रुग मालिनि पुत्रा वि
धि॥ ॥ **न न मूल सन्ध विद वा वृत्ति॥** धर्माय न मे॥ ज्ञानाय न मः॥ श्रु वे वा ज्ञाय
न मः॥ श्रु ने व यथाय न मः॥ अधर्माय न मः॥ अज्ञानाय न मः॥ श्रु वे वा ज्ञाय नः॥
श्रु ने सूर्याय न मः॥ आध्वन ह कथं या दि॥ ३ सरु मुद ल न क प द्या स्या य न मः॥

लौ पृथिव्या धि प न य बुद्ध धमा स्या य न मः॥ ३ वां कला धि प न य विष्णु धमा स्या
य न मः॥ ३ वां तजा धि प न य ब्रह्म धमा स्या य न मः॥ यां वाक्का धि प न य ॐ स्व न
धमा स्या य न मः॥ ३ कौ पंच वक्त्राय विपदा धि प न य सदा हित धमा स्या य न
मः॥ **उं ह्रीं सोः** हि पुत्र सन्ध नि श्रु मृ गान्वा वा स्या य न मः॥ **उं ह्रीं सोः** हि पुत्र स
न्ध नि पाता मृजा स्या य न मः॥ **ह्रीं ह्रीं सोः** हि पुत्र वा सि नि द्या स्या स्या य न मः॥ हं
ह्रीं ह्रीं सोः हि पुत्रा पि च का स्या य न मः॥ **ह्रीं ह्रीं सोः** हि पुत्र मा वि नि सर्व सन्ध स
य न मः॥ **ह्रीं ह्रीं** हि पुत्रा सि द्ध वृत्ति सात्मा सि द्धा स्या य न मः॥ ३ वे प ना ये अ
प ना ये प ना ये प ना ये **ह्रीं** आनन्द सदा हित वा य य न पत्मा स्या य न मः॥ ध्यान

ध्यान

नरपद्म निरुद्धवी माला कंकिलनाय ॥ अवाकसुमसंकाशा ॥ अतिमीकृणु
मायमां ॥ यद्यत्रागपतिकाशां कृकमादकसनिहं ॥ सुत्रमकृतमानिक्रं किं
किणीजालमलुगी ॥ कालाग्निकलसंकाशां कटिलालकपलवा ॥ पश्यप्रवृत्त
संकाशां वदनारुजमलुला ॥ किंविददृन्दुकटिलां ललाटमृदुपट्टिका ॥ पिना
कधनुवाकारं स्वयं पत्रमध्वनि ॥ श्रानन्दमृदितात्राल लिलाद्यालितवाचना
सूत्रमयप्रसंगान विनतादमकलुला ॥ मगलुमलुलाराग जितन्दमृगमलु
ना ॥ विष्वक्मादिनिर्मान सुगुण्यष्टनासिका ॥ ताम्रविन्दुमविम्वारं वक्राष्टिम
मृतायमां ॥ स्मिन्माधुसविजित माधुर्यत्रसमागता ॥ श्रुनोयम्यगुल्लयत विव

कादशा ॥ अरिनी ॥ कस्यपीतामहादवि मृनालत्रलितेवृजि ॥ प्रकाशयलदनाका
प्रकसुमात्रकलासुजा ॥ कनासुजनखशात विशाजितनरुसुवा ॥ मृकात्रवलत
धन समुन्नतयथाधनां ॥ शिवलितलनायकां मधुदशा ॥ म ॥ अरिनी ॥ लावण्यम
लिदावर्त्ता कावनारिविरुषिनी ॥ श्रनद्यनलघटितं कां चियुक्तनिरम्विनि ॥ नि
तम्विस्वद्विप्रदा वामनाजितवां कृशां ॥ कदलिललितमृमृ सुकमाना नृणामि
ध्वनि ॥ लावण्यकदलितुल्यं जंघाखगलमलुगी ॥ वक्रविष्णुसिधनल निघुष्टव
न ॥ मृजा ॥ गिनीपुणनसंकाशां कानिसकानरुसिनि ॥ लाहिनु जितसिन्दुन अवादानि
मनागिनि ॥ प्रकवसुपनिधन पाशां कृशाकनाशनी ॥ प्रकपूषा निवर्षु प्रकारुनः

लमलिता॥ चतुर्भुजा तिनरुं दु पंचवानधनमृदना कपूत्रमकराभिधतामृत्रिपूविर्ग
 ननी॥ माहामृगमदाहाम कंकमात्र विग्रहा॥ सर्वलक्ष्मीप्रवणश्यां सर्वल्लिकात्र
 रुचिती॥ जगदाह्लादजननि जगदंजनकात्रिणी॥ जगदाकर्षयंकाली सर्वसौभाग्य
 सन्दवि॥ सर्वलक्ष्मीमयिनिर्णयप्रमानन्दनदिता॥ महाहिपूत्रमूर्धादुस्मृत्वावाह
 ननामया॥ विन्दयावाक्पुनरागनमस्कात्रीलियुक्तया पूर्वकिपाधनकात्रन्दा महा
 हिपूत्रसन्दवि॥ वक्रमधुसंविद्य नमपूजासमानरुत॥ ॥ गिर्यांजलि॥ जैलामो कौं
 वक्रवक्रउडियानधि॥ श्रीवयानाधनमक श्रीमहाहिपूत्रसन्दविदवी पत्रं
 वक्राहाकि श्रीपादकापूजयामि॥ ददयादिषठ स्तनसंयुक्त॥ आवाक् विखण्ड

५३५

थानिमूर्धादंशयत॥ वलिधमन्तु॥ गयरी॥ जैलामो जैहिपूनादवीविद्य कौं काम
 धविधीमदसौतेशा किन्नयवाद्यना॥ वालमूलन॥ धनसन्दविपूजा॥ ॥
 नताहेनवीदवावर्न॥ न्यास॥ जैशुक्रायंरुद्र॥ कन॥ धन॥ कंकनिष्ठायनमः॥
 क्कौ श्रुनामिकायसादा॥ क्कौ मधुमायवाषट्॥ क्कौ नरुनायदं॥ क्कौ श्रुगुणायवष
 ट्॥ क्कौ श्रुक्राय४रुद्र॥ क्कौ ददयायनमः॥ क्कौ लित्रमस्वादा॥ क्कौ लिखायव
 षट्॥ क्कौ कववायदं॥ क्कौ नरुमुयायवषट्॥ क्कौ श्रुक्राय४रुद्र॥ जत्रपाणश्रुधः
 पाणपूजा॥ रुतपुदि॥ श्रीश्रुतपूजा॥ आधोवसकथयादि॥ नकेपद्यास्त्रायनमः
 पंचधनास्त्रायनमः॥ ध्यान॥ वन्धुकपूषसंकाशं त्यादि॥ पूजनं॥ अंजुसोः हिपूना
 १ वन्धुकपूषसंकाशं पंचवक्रावपीतका विद्यामंगयदातानी॥ वंदे

पुनरेनवीधनयुयंनमः॥

कुंकुमसुधा॥ कृपानुक्तमुपचाय॥ कुरुपालदुदाहता॥ पंचासद्वर्णमुद्रात्र सुन
 र्द्वंकुपालका॥ सखावल्गुविहीनामुद्रा कुरुपालाशुदुदहा॥ प्रकलिगवर्द्धकात्र
 म॥ नवकुर्यावहं॥ महालक्ष्मीवल्लभात्र दालामुद्रावसम्पदा॥ प्रकवाकवतना
 थ विज्ञात्रवदनावसा॥ यक्षत्रावागुदावसा यक्षत्रावज्जनाम्वनं॥ सप्तमकुलिधात्र
 यः पर्वतामवतसुधा॥ लिमत्रावतयदा निवामनिरुद्धकं॥ प्रसक्तुधनाध
 का यक्तुवातसुकाष्टकं॥ अत्रावसवर्नविद्या दवलिमधुकसुगा॥ चहुषष्टिमहा
 विद्यापालयित्वा सिताजगता॥ गुरुद्वरसदाकालि वलिपूजा निवदयता॥ चत्वारस
 गुरुपाला दिजायागुरुनवलि॥ रुखगुरुनृपद्विच स्वावात्रिवलिकादिना॥ निर्याधि

अ२

कान्तिचत्वार कवादाः नवजयता॥ ववर्वाः पिङ्गलकसाथ पिङ्गलद्रुपिङ्गलला
 वना॥ दंष्ट्राकनालसुपा कपात्रोरुनाहना॥ कामिप्रवन्दलीखलु मृगमलिमिः
 नदुर्लभे॥ पृथ्वीरुक्तसुधाचक्रु दीपेधूपेमुगुनुले॥ रात्रिनामलिनायेथ कर्मपूजाः
 यत्रायले॥ यक्षत्रायेथ निगाये सुपिनाका मदासदा॥ कुंकुं अमकाय अवन
 व२ कुरुपाल महावल कपिलजगु रात्र रासुत्र छिनरुदालामखा गन्धपूषा वलि
 पूजा गुरु २ रुत्रवद्रुप कुनृ २ ल २ रु २ रुः महाशमनाधिपतय दमस्र वनदमम
 खाहा॥ मन्त्रनाम १ सवर्नी विधिवदलिदाननं॥ नदुर्लभे रुद्ररु नायस्रान्तिदिः
 कुरुयं॥ निर्ययमादिता नाजा सर्वथा वल्लकारुवता॥ पिङ्गललरुका मान् स

[illegible]

दाशपदावसवव॥ दशपदमसंदहाः सर्वदिग्गमसंस्थिता॥ यागिनियागवीनः
दाः सर्वगुरुसमागमं॥ दं पर्वमहावर्कं धीनाथवन्द्यमस॥ यरुकाः सासन
दवी पुत्रपादावनेवता॥ सर्वसिद्धिप्रसादा म दवीनघामुवत्सदा॥ विनाशं यागि
नीनां यमसिद्धिं समहितन॥ न दकावलिंदवी समयाश्रमलक॥ अतिस्मृति
मनः प्रसि मां समदासिनीविर्ग॥ निकतयनुदस्मानं यागिनीगलसंकुला॥ कर्क
कालिकमाप्रानि दन्निमिरुन्दराधिर्ग॥ निकननुसर्वप्रियागिनीगलसंकुला॥ कुं
कावादिषूअपि ॥ सुयसावाः पुकाहिता॥ उपपी ॥ मुसं दादा सिष्टनु समयमदा
॥ महियादालवक्ता ॥ सर्वस्तिनानुवायुवा यागिनायागयुक्तात्मा समयनिसुहृ

साधका॥ विप्रकर्मपूवीप्रत्या सत्यनिष्ठं दुदवता॥ लिद्धाश्रयपुरुकावायाः साधका
समयगथा॥ नगनवाथप्रमंवा अदवासा सलद्वन॥ वापिकुपेकवृद्धवा ॥ ॥ ॥
नमारुमलुल॥ नानावृषधनदद्या वदुधयाववस्थिता॥ नवसर्वप्रिसीकुष्टा
वलिगृहनुसर्वग॥ सलनागनाहसुषी सर्वमनल्लपुदं॥ पावदं जलयाक
मयतकनिष्ठा मियतकनं॥ वलिपूष्यपदाननसनुषाममचिन्का॥ सर्वक
मनिमिधनु सर्वदायोः प्रसनुम॥ लिव ॥ किप्रमादन धीककावान्नमाम्यहं
॥ ॥ निसमयवलि ॥ ॥ ॥ सिद्धं ॥ अमुयदं रुदसादा॥ अरुलखिनमः ॥ ॥
षट्कनमः ॥ ॥ निवलिगृह ॥ २ ॥ स्वादा॥ वृष विनमे ॥ नकां दिनमः ॥ ॥ ॥ नव

लिनमः॥ खलिनमः॥ मलिनमः॥ मलिनमः॥ मलिनमः॥ मलिनमः॥ मलिनमः॥
 नमः॥ विक्रमाधिनमः॥ लम्बकधिनमः॥ लम्बकधिनमः॥ लम्बकधिनमः॥ लम्बकधिनमः॥
 यानिनिवर्तिगृह्ण २ स्वाहा॥ कांजात्रधनमः॥ कांजात्रधनमः॥ कांजात्रधनमः॥ कांजात्रधनमः॥
 कृगृह्ण २ स्वाहा॥ जेकांसी पूर्वपि० कृगृह्ण २ स्वाहा॥ ३ आः
 (नपि०) विप्राकृक कृगृह्ण २ स्वाहा॥ ३ दक्षिणपिथ अग्निवर्मा
 ल कृगृह्ण २ स्वाहा॥ ३ नेमरूपि० अग्निजिह्वा कृगृह्ण २ स्वाहा॥
 लिं गृह्ण २ स्वाहा॥ ३ वनूपी० कलात्र कृगृह्ण २ स्वाहा॥ ३ वायु
 वृषि० कालात्र कृगृह्ण २ स्वाहा॥ ३ उरुवपी० चक्रपाद कृगृ

दा ३

यालायवर्लिगृह्ण २ स्वाहा॥ ३ मृत्तानपी० लीमनूप कृगृह्ण २ स्वाहा
 जांजां कृ अमृकदिप अमृककृगृह्ण २ स्वाहा॥ अमृकद वि ॥ कि ॥ दिनाय अवरुत्र २
 गृह्ण २ सुत्र २ मन्त्र २ खर २ ७७ हार २ मारुमना विपनय र्मां पूजा वर्लिगृह्ण २ स्वाहा
 ॥ जेकांसी वक्रय वक्रालुखलु विपनधित्रमदा लिंध लिंध पवन्मानानुष्क क
 पुत्रक पधुपिनि नपन पवना पुत्रया ॥ वक्रनद्या नलान कृक कनक निविः
 गलुवतिष्ठमहा दविचक्र विकिर्ष स्वयमिति वरवा वक्रनारु पुनानु ॥ ३ द
 वक्रालु नावा दिविगल नल निस्करुनलवा पातात्रवा तनवास विलपवन
 या यर कृगृह्ण २ स्वाहा॥ पिठं कृगृह्ण २ स्वाहा॥ दिष्वपलकृता पुष्य वन्द्यादिकनः

पितादद्यात् धनं धुनवलि विधिना याहुवीनद्वयव्या ॥ साधु सिद्धवसव्यं अ
 विपिहितवर्ति पूजा गृह २ मम भक्ति काम स्वाहा ॥ ॐ मां वर्ति पूजा गृह २
 मम भक्ति कृपू २ दं हट स्वाहा ॥ धूप दिप नेवय जाप स्वाहा ॥ पतिस्त्वा ॥ वृ
 षपूजा ॥ पशुनयन ॥ देवनिवर्तनादि ॥ दवस्व गहन विद्य ॥ सिधुनदपातः
 द्वि ॥ श्रावधिकन ॥ दक दवधियकाव विद्य ॥ यत्र साध ॥ स गहन धवि वावा
 वविद्य ॥ श्रावय पूजा ॥ दक्षिनादि ॥ यजमान अरि मय ॥ ॐ तिथी विपू नमं द
 वि कमाविन विधिसमापः ॥ ॥ वनिद्याय उकाङ्का ॥ उग्रवधुवलि पंचव
 लि धाखा यिनाय ॥ डरुन कच्च कालियावलि ॥ ॐ नृनाया दवनवाद दं दः

सा १

श्रावनेवत्यादमाशुनं ॥ दक्षिण कनास श्रावनेवत्या मूनवलि काधवाख
 ॥ दवनवाद दं द ऊवयाहुजावन कनाहु ॥ दं द नं व वलित्वाहा ॥ गदला
 दनसा पवृदिगु विमयास अरि मय मगव अन विविद्य सकल नाद ड (थं
 शना ॥ ॥ मरुनिया विधि नवमि कृद् कृद् नयूजायार्ग कनादयक चवव
 णियायमान ॥ दवन खन्द मूनयार्ग ॥ सवन रुक्मि ॥ ॐ ल्का यल्का श्रावनिववय
 निवा कल स गवद ॥ ॥ थं काविवादाव स्वमिकलन ॥ साधुयादाव खलुकाय ॥
 थं कादिह्माय ॥ निवर्तनादि यादाव सानयाय वन सिधन जजमका अदवा
 न कर्ण पनाकान ॥ स गहन विद्य सवन मविद्य विद्या अलिह्य ॥ साधुयाय ॥

शिवभारवकुमहादर्वदतानामनुमाचनगायावतसूयश्चन्द्रधगावतस्किनमाचनगा॥ निविष्ट
 सहाननूय आनतिकन॥ पतिस्तुयाय॥ धृतधूनदाव क्रायादाव लिकायाव सने
 धिनदाव वालाहाकल्य सामनदेव्यादि॥ वाक् नवमिषावनि खलुस्तपनद
 ॥ मिषाज गावकाप्रथिनारुवहु॥ धृतधूनदाव सदायार्थ वास्यहय॥ कृकन
 पूजाधूनदाव दूकायाव धवजवसनय॥ पृथराजनयाचक॥ दूकायाव पूजा
 याहय॥ कर्मावनिधूनदाव कृकनहुजा पूजायाय॥ भादनि नगुलिहय॥ धू
 पदीप जाप क्राह॥ पतिस्तु॥ वाक्॥ वृषपूजा॥ पसुनर्पल॥ दखनायाचक॥ ह
 स्ताद्य पादाद्य याचक अन्नसंकलयाचक॥ सग्वनतय॥ वाहानहुक्याय॥ शी पूजा
 गायपातास धूनजजका वस्त्रान लास्त्रान॥ भादनि सग्वनतय चत सिधन का

८५१० का कि नि स ना ॥

दूजजमका स्त्रान तकुस्त्रान दक्रानय॥ धविर्महान कहुवाद्यविवा अना॥ ग
 दक्षि॥ दक्रासंवमात्र स्वात सवृनि माधयलु॥ ५॥ मगाकवात्रि ससा दका
 पालू पंथरात्रतय॥ कंचवादासनय॥ मगाक॥ नवलातसत्रिम्याला॥ कृकलहु
 जा विसर्जनयादावहुय॥ समस्तमानकावहुय॥ ॥ लिहावलदाव यन
 दयास्त्रानविया॥ दूवनहुगादमतव॥ विप्रराष्ट्र॥ कर्त्रखपूजा॥ सातिकृद् निह
 कर्मनियाय धूनदाव वलिधयावहुय॥ उर्ध्वहुय॥ वलतलदाव खात्रवात्र
 याय क्रायादाव काय दगुयामात्रडा खंदडा थंकात्रिलवक्राय स्वस्तिकसथंका
 दितय॥ निवर्चनयाय सग्वननखाय कर्त्रस अविमखविय॥ चत सिधन भाद

विगतनाथ सदासखपुनकम्॥ नवमात्रि नद्विद्वि नवीनाजिनयगधमात्रावतप्रभुधम
 अथ यावदाकासमदिने गावतर्वरवगाने यधमवर्धु जितारुया॥ विगतववउ॥

नि. सग्वन. हाग्वनस. दवस्वानविय॥ हियांजलिहयाव. स्नाययाय॥ गूर्नसंतिषु
 धनाय. सर्वहा. रुदयंकरी॥ पसनासिजयादव. खड्गनाथं नमामुक्ता॥ दकाया
 वतया नयादाव. पासनयाचका॥ नदुहया पासन. दकावयाचका॥ थन धूनद
 व. सहानलय. आनतिकन. पतिष्ठा॥ दिगसयाव. द्वाया॥ वाक्का॥ सिद्धि. धुसिद्धि
 धयसाधना॥ गमनं वार्थलाकाय. दमाय. विजयायच. ॥ रुप. रुविनालय. पुनना
 गमनायच॥ रुतमयात्र. वाय. वलिनाकास॥ खंद. स्नाययादाव. कायाव. धयसंनय
 ॥ मरुनियादव. सत्रमूमान॥ वसाधनयासात्र॥ घानदावतत्रस. सनायं सना. तका
 सनयाय॥ वाय. पिबुयसतत्र॥ मरुनिया. रुमनसंति॥ वसाधनयानिर्झरना॥ ॥

ॐ अ श्री श्री १३ विष्णुर्दं पि० वक्रसंस्तु विष्णुदत्ता किली विष्णुदत्ताथ दवधी पादुका॥ क०
 ॥ जैकैखं १२ अनादतपिगस्तु अनादतना किनी अनादतदवधी पादुका॥ ददय॥ जेकीः
 श्रीरुंदं १० मनिपूत्र कुमलिपूत्रकला किली मलिपूत्रकनाथ दवधी पादुका॥ नारी॥ ज
 कीक्रीवर्णं ३ स्वाधिसुनपी० सु स्वाधिसुनकाकि नि. पीपादुका॥ स्वाधिसुन॥ जेकी क्रीव
 ॥ ०० मं मूलाधनपी० सु मूलाधनसा किनी मूलाधनदवधी पादुका॥ मूलाधन॥ जेकी
 श्रीरुंदं श्रीरुपि० सु नाकाकाकिनी यना श्रीरुनाथ दवधी पादुका॥ नरुदय॥ ॥ नृतिवडा
 संन्यास॥ ॥ गतासुसुखिदवी पूजाविधि॥ गुवनसस्कारं न्यास॥ उं ह्रिष्टवाभुलि
 निश्रुमायहृद्॥ कनसाधनं॥ उं ह्रिष्टवाभुलि निश्रुगुष्टायां नमः॥ सुसुखिदवी गऊनि

ह्रीं नमः॥ महापिशाचिनिमत्स्यमाह्वयं नमः॥ ह्रीं श्रुनामिकाह्वयं नमः॥ ०:०:०: कनिष्ठाह्वयं
नमः॥ डं द्विष्टवाधुलिनी समुखिदवी महापिशाचिनि ह्रीं ०:०:०: कनकनपृष्ठाह्वयं
नमः॥ श्रृंगन्यामः॥ डं द्विष्टवाधुलिनि हृदयाय नमः॥ समुखिदवी निप्रसस्वाहा॥ मह
पिशाचिनी गिराय वषट्॥ ह्रीं कवचाय हुं॥ ०:०:०: नरुगयाय वौषट्॥ डं द्विष्टवाधु
लिनि समुखिदवी महापिशाचिनी ह्रीं ०:०:०: श्रुक्ताय हुं॥ ४॥ ॐ ति श्रृंगन्यामः॥ जत्र
पाशपूजा॥ श्रृंगपाशपूजा॥ खड्गगनसंपूजयन्॥ रुद्रधुवि॥ आत्मपूजा॥ पूजनं॥ स्नान
वगसिधेन जजमका स्नानद्वय॥ ध्यानं॥ सेवायेति मवासीनं नकां वनपत्रिद्वयं॥ न
कात्रं कात्रसंयुक्तं गुंजाह्वयविनाजिना॥ घात॥ ह्रीं वयुवतिं पीनान्ननपयाध्वनीं क

पात्रकहिरेकोक्तां यत्र नश्रुतिनृपिनि॥ वामदक्षिणया ध्यानं ध्यायत्पुनश्चिह्नमः॥
ॐ ति ध्यानपथित्वा॥ पूजनं॥ डं डं द्विष्टवाधुलिनि नमः॥ समुखिदवी नमः॥ महापिशा
चिनी नमः॥ घातसाधविनि नमः॥ क्रियाजलि॥ डं द्विष्टवाधुलिनि समुखिदवी महा
पिशाचिनी ह्रीं ०:०:०: महापिशाचिनी धीपादुकां॥ खड्गगनसंपूजयन्॥ डं द्विष्टवा
धुलिनि हृदयाय नमः॥ समुखिदवी निप्रसस्वाहा॥ पिशाचिनी दवी गिराय वषट्॥ ह्रीं
कवचाय हुं॥ ०:०:०: नरुगयाय वौषट्॥ डं द्विष्टवाधुलिनि श्रुक्ताय हुं॥ ४॥ ततो वलि॥
डं द्विष्टवाधुलिनी समुखिदवी महापिशाचिनी वक्रमयी ॐ ह्यडं द्विष्टमेव पिशाचं
सूनामां स अदन मधुयूक्त वलिं गृह्णामस्मकल मिष्ट सिद्धिदहि ०:०:०: हुं हुं

स्वाहा॥धनवलि॥नमोनेवाद्यादिकंदत्वा॥जाप कृपसमर्थला॥गुक्तागिगुक्तागोफात्वं
गुहानासक्तर्गकृपं॥सिद्धिरुवहुमेयन स्वयसादात्वयिस्त्रिता॥पूर्य गृह्णित्वा॥स्वाहा॥
३॥१६॥३॥॥००॥॥४॥

स्वस्वाधनमपाठ अमिसिंहकृपांमात्रदास माधवसिंहकृपायात्र धनंदाव॥संवत् १०५
वैशाखुदि०॥पात्ररुमात्र धनंदाव धनपात्र॥सं१०१वैशाखवदि०॥ ॥महतिपाठ
दूयिनिश्याअजिमात्र धनंदाव पात्ररुमात्र धनरुनखानकाद॥सं५१०रादु
दि३॥माधवसिंहया ००निमात्र धनंदाव नवरात्ररुकापाठ॥पात्रगवमिसिंहकृपा॥
सं१०१वैशाखवदि०॥ ॥संवत् १२०६विजयकृष्णसदगुलकृक दिन अवनपु
क सफमिकृष्ण जकृजाग जापुया १० वाकृनित्यकमृद्विदुषाकि निमित्यर्थ धनदगु
नकृकयाविधि॥अथ बालाहाकला मासनकृपायादि॥काथपणनमदामाहं धी
सददवीपीत्यर्थ नामघटितसूवर्णलिफं सुवर्णदाउमृत्तज॥अथगुदि॥सं१०५४

वस्त्रधन... दलिवामालकाम... धर्मादाव आसनाजयापात्रसंग... ॥ ॥ सग... ॥
 लननया... धार्मिककृष्ण... धर्ममीदिन... अरुयसिंदनदगा... ॥ ॥ वसाधनपाद... विष्णुनामया
 पात्र... धर्मदाव... शयनामशया... निमात्र... धर्मदाव... संग... ॥ ॥ धावनपूजि
 माकृद्गहनदत्तसा... पूजाकायमालयादलिकृद्गुह्य... संग... ॥ ॥ शयनामश
 या... निमात्र... महनिपाद... किष्कू... शयापात्र... आचार्यजयनाम... पिनाग... आचार्य... ऊजमा
 न... मिसामद... मिसायतावातिनयाव... कथनयादा... ॥ ॥ संग... धवनचक्र

कृ... गहनदत्तसा... यथादलिकृद्गुह्य... चवदससमानशत्रुसाःपाद... संग... काहिः
 धुक्... धूलिमा... मनाहनशया... निमाक... पादकृद्... सकत्र... धुक्काव... सक... हातकत्र... या...
 १ श्रीं क्रीं क्रीं नै सौं ॐ क्रीं क्रीं नै ॐ लै क्रीं ह्रै क्रीं ह्रै लै क्रीं स्रै क्रीं

लै क्रीं श्रीं क्रीं सौं ॐ क्रीं क्रीं श्रीं पादक्रीं ॥ २ क्रीं श्रीं सौं श्रीं क्रीं

धक... कयाक... नानसिथा... समत... रादवदि... वदुदलिकृद्... धर्माशमाकदि...
 संग... ॥ ॥ ३... श्री... स्व... श्री... आगम... शयीतिन... कर्माचार्य... मयासि
 हयार्गे... विविकमसिंदन... मयाधर्म... मयाविया... ॥ ॥ धुक्ममु... ॥ ॥
 १... संग... ॥ ॥ ३... श्री... स्व... श्री... आगम... शयीतिन... कर्माचार्य... मयासि
 दामाकया... लयलकृद्... यानस... धननायभादाव... लुकनावाका... दूदावय
 लासव... मिऊनमद... मिसामिद... पूजावातिमयासि... आवाते... ऊजमानय... नाम
 आवात... वाकन... स्रै... ॥ ॥ स्व... श्री... स्व... स्व... नायनम... ॥

१ अक्षयादि॥ अमकम् अमकनामदास श्री ३
 सुषुदवतापीति पूर्वकं यममेवने इव यो यो
 दिय निवानसमृद्धि ०० हा न ग्माय यन न मो क
 कामेनूया सख्यं जने मायिष मास यं रिमा
 स सर्वनसोमिष समनतयकानामि सोयनान
 सहिताने विष्णुदेवते श्री ३ स्तु दवतायेति
 धेदयामि नमः ॥ वडोनास ॥ अथा

२ श्रीरामदास

अकि ७ इव मा
~~१ सीत १४ सुषुदवतापीति पूर्वकं यममेवने इव यो यो~~
~~नमः सीतया~~
 १ सीत १४ सुषुदवतापीति पूर्वकं यममेवने इव यो यो
 या ०० नी नमः सिक थकृन्नापी घटी जिम खद्यली जाव वल सिता थकृः
 थकृन्नाया नाति सै खे पदल जाव वल स काथ्या दुर्गम निन्द सिदया ०० नी
 मायां थतयता हान पूजायाता थगु थस थथ दथ कल वृक हय खा कृप
 वसं मतया हाव ०० नी माया थतय मधु का धल स थया पूजा असा धू
 ना थ पूजा याय जिला मजिला धका हल स स्वक्रा नाय कन पूजा असा

सुखिनी स्वष्ट देवतापुतिनी
जिह्विनी स्वष्ट देवतापुतिनी
जिह्विनी स्वष्ट देवतापुतिनी

सुखायाधूननावयानमरुया नीमावाधतिवधकधयमरुयाध
कामजययातकावेधतयावेकोलाथगुधार्पवसमूनसाइतीयाठाव
हामद्रथयातनुवेसिपतसमामेलाविगनयशयवधकधसुयावव
नीयाहाधकविषुयाकजायययाठानथवयंविवक्राकानंमरुयाव
जायापजंतलकनंमरुयावपंवसमूर्ययनहाउविषुयता
यादमनिपद्रपयलादमनंमद्रधकगमजयडाकायाअरुमुदि
११ गमजययाहाशवनलीहामद्रथसानक्रायताथगुलीअवसाह

पिण्णमावा
वलेसाकागु
७८८ ७६९
७८३ साल
जयसमया
७८३ ७६९
८००
८०५
विश्वरामया
८९४
८९५
मयातिया
८३९ ८३९

युवमुहंशाथनंलिआरस्वष्टदेवताश्रगमरुयीतीनहाउयावि
पुनताला१कतकीखानयांठियाद्रुपातयकावदमनिवियाहलागुहं
दनायनासिगयवाकेअवलापिअमूकगाअमूकनामदासजीस्वष्टदेवताप्रीतिपूर्वक
सागिकावगुरुवेनमार्गस ७८८ पिनाग ८९४ विश्वराम ८३९ मयातिया
७८३ ८९८

लक्ष्मीधर
८५८
पुस्तकमद३२
नेधिकदले
भाजुधरे
भाजुमने
२७४
राजविर
९०००
मौरवली
हवमान
९०५४
काजीमारा
अचुता

मनहंशयायनीभाक
काहिकहुदि११सम्वत् ८०९
याडावांडा: मातानसीभाक॥वतनिस
तिमदयकी. आवातनंहुबूकाशना

मनहंशयायनीभाक काहिकहुदि११सम्वत् ८०९
याडावांडा: मातानसीभाक॥वतनिस तिमदयकी. आवातनंहुबूकाशना

संभवतः ७८ सावसुदि १५ युष्माकुनुग्रहणदया. नृयासंभवतः ७६१ मिति वो
यातगुवमोजित्वया. त्रयोदसिपुष्पाजयकला. यालथाथुयामानविर. उत्रकुमा
या सः ७८ ॥ संभवतः ७८ सावसुदि १५ युष्माकुनुग्रहणदयाव थगुलिसालस. त्र
योदसिपुष्पाजया. यालहोशयागोयालया याल संभवतः ७८ ॥ शुभा ७८० सावसुदि मास गृह न
संभवतः ७८० सावदि १० विजकहेया आगमे. खुनखुयायनकावे भादवदि १२ स. देवव. भाजुमनश्च ^{देव सा होरा}
बाजु अहोरात्रयुतयाव जज्ञयाज्ञव. देवया भाजुमनश्च बाजुयायनश्च गव्यवियाव. नित्ययुयातकावे. थायुजाया कदि ^{जै इया याल}
संभवतः ७८३ श्वेतवदि ११ ईकाशया व. उयो दसि वलेतयव. माग ईकाकायकलं ईका दथुया जितमा
पति. वत्र नयालथाथुया रूद्रया याल ॥ संभवतः ७८७ सावनया युष्मापुष्पाग्रहणदया
वहकायाव त्रयोदसिजयकला याल दथुया सुदरया संज्ञानया याला नायक दथुया भानर

श्रीआगम

संभवतः ७८८ वैत्रशुक्रया युष्माया दमतारोह नविजकोहे - २ याधवछाया यतोद्गृहं थाथुया
भाजुमालाया कायचदुवीरया मोबावुयाव जयवलिमालावचाना. थाथुदथु मुज्जवसहाजुला
धंछाज्जकेलामज्जयकेलाधका दथुंधाला थाथु उत्राविलाधंछाज्जयकेमाजि उत्रि मिजयवलिमा
सांयवकालया युजावलेया ज्ञतया गुद अर्कमजुधका उत्रावियाव धंछाज्जव थाथुदथु वोजव
वाहिक मड नायक दथुया भानर सुकु थाथुया चदुवीरसि नकिं दथुया लिलाधरया लोवल्ली शुभा

७०२१

